बच्चों के लिए प्रचार्य की कलम से.....

वर्तमान परिस्थितियों ने आज हमें अतीत के झरोखों में झांकने एवं पृष्ठों को पढ़ने का अवसर दिया है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के दौर में जब पूरा विश्व एक दौड़ में धावक की तरह दौड़ रहा था तब अनायास एक सूक्ष्मतम जीव नोवल कोरोना–19 नामक वाइरस ने एक अवरोध खड़ा कर दिया। विशाल भूमण्डल के प्रत्येक भाग में जहां भी मानव प्रजाति रहती है इसने दस्तक देनी प्रारम्भ कर दी, धीरे–धीरे सर्वशक्तिमान देशों से लेकर मध्यम व छोटे देशों में भी इसका प्रवेश हो गया है और यह भी सत्य है कि इसके प्रसार के लिए भी मानव प्रजाति ही जिम्मेदार है। आज जब विश्व के जाने–माने चिकित्सक, शोधकर्ता, वैज्ञानिक, विश्व स्वास्थ्य संगठन इस अवरोध को समाप्त करने, इसके लिए वैक्सीन खोजने में लगे हुए हैं तब कहीं–न–कहीं यह भी चिंतन करने का समय है कि प्रकृति के साथ बेईमानी, आधुनिकता की दौड़ में स्वार्थ की बढ़ती प्रवृत्ति, अपना गांव, शहर या देश छोड़कर प्रवासी होने की होड़, अव्यवस्थित जीवन शैली ने हमें इस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है।

मेरे जैसी वयस्क पीढ़ी जो उम्र के 50 दशक पूर्ण कर चुकी है यदि अपना बचपन सोचे तो कितना सुन्दर शांत और प्यार से भरा था, शहर में रहते हुए भी गर्मी की छुट्टियां होने का इन्तजार, दादी–नानी के घर जाने की जल्दी, आज भी गुदगुदा देती है, प्रातः उठते ही बड़ो को प्रणाम करना, आंगन में निकलकर पक्षियों की चहचाहट से भरे आकाश को देखना, पवन के झोंको में खुद को महसूस करना एक सुखद एहसास देता था। नया दिन–नया सवेरा उर्जा भर देता था और घर का प्रत्येक व्यक्ति अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो जाता था। अड़ोस–पड़ौस में सब चाचा–चाची, दादा–दादी, बुआ होते थे। अनजाना नहीं लगता था, ऐसा लगता था हम एक बड़े परिवार के बीच सुरक्षित रह रहे हैं। सीमित संसाधन, कम आय होते हुए भी जीवन–यापन सरलता सहजता से चलता था, क्योंकि व्यक्ति की महत्वाकांक्षाऐ उसपर हावी नहीं थी, ऐंसा नहीं है कि वह पीढ़ी आगे बढ़ने के सपने नहीं देखती थी, प्रयत्न नहीं करती थी या पढ़ी–लिखी नहीं थी, अन्तर था तो यह परिवार, समाज, प्रकृति, परिस्थितयों के अनुकूल अधिकांश निर्णय सर्वसहमती से लेने की प्रचीन परंपरा का पालन किया जाता था।

जैसे–जैसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी का विकास हुआ हमने भी इस ओर अपने पंख फैलाने प्रारम्भ किए, पूरे विश्व में भारत के वैज्ञानिक, शोधकर्ता, इंजीनियर, चिकित्सक अपनी योग्यता का पंचम लहराने लगे। भारतीय युवा गांव, छोटे शहर से निकलकर बड़े–बड़े शहरो और विदेशों का रुख करने लगा, क्योंकि विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों, शोधकेन्द्रो या संस्थानों में पहुंचने के लिए यह आवश्यक भी था, केन्द्र की सरकारे या राज्य सरकारे भी विभिन्न माध्यमों से प्रत्येक नागरिक की पढ़ने, आगे बढ़ने, देश के लिए योगदान देने के अवसर प्रदान करने में लगातार प्रयत्न करती रही है। राजनीति, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, विज्ञान, चिकित्सा, शोध सोशलवर्क जैसे न जाने कितने क्षेत्रो में हम भारतीय पूरे विश्व में सर्वोच्च स्थान बनाये हुए हैं और अपना योगदान दे रहे हैं।

यह वास्तविकता है आगे बढ़ने के इस दौर में हम धीरे–धीरे अपने परिवारों से दूर होते चले गए, व्यक्ति ने अपने चारो ओर एक वर्चुअल दुनिया का ऐंसा खाका तैयार कर लिया कि उसे वह कृत्रिम दुनिया ही अपनी लगने लगी, सोशल मीडिया के माध्यम से हम अनजान, अदृश्य के तो मित्र बन गए परन्तु वास्तविक परिवार के सदस्यों से दूर होते चले गए, मॉल, क्लव, पार्टी, पब की चकाचौंध ने एक ऐसा आकर्षण पैदा कर दिया कि बिल्कुल अपने आस–पास के छोटे–छोटे पार्क, उद्यान, मोहल्ले की दुकानें, छोटे–छाटे डिपार्टमेंटल स्टोर्स हमे दिखने ही बन्द हो गए, बड़ी–बड़ी गाड़ियों में बैठकर लम्बी दूरी तय कर मॉल में जाकर खरीदारी करना एक फैशन बन गया, परिवार के पास बैठकर शाम की चाय पीना या साप्ताहिक अवकाश घर में मनाने की परम्परा को पिछड़ापन समझा जाने लगा, बच्चों की छुट्टियों में अपने गृहजनपद या गांव न जाकर विदेशों में जाना स्टेटस सिम्बल बन गया, अपने ही छोटे से परिवार में भी बच्चों के साथ पुरानी यादे साझा करना, कहानी सुनाना, उनके दादा–दादी, नाना–नानी के बारे में उनसे बाते करना, उनके संस्मरण बताना या अपना ही बचपन उन्हें बताने का माहौल अब कम ही दिखाई देता है,। आज के बच्चे अपने अनुभवो या रोजमर्रा की घटनाओं को परिवार में बातचीत के माध्यम से साझा करते हुए बहुत कम मिलते हैं उनकी यह बाते स्वयं माता–पिता को फेसबुक या अन्य माध्यम पर ही पता चलती हैं क्या यही विकास है? यह एक प्रश्न चिन्ह तो है ही चिन्तन व मनन का भी विषय है, आज जब हम इस वैश्विक महामारी के संकट से जूझ रहे हैं और माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सामाजिक दूरी बनाये रखते हुए परिवार के साथ घर में रहने की सलाह दी है, क्योंकि यही एकमात्र उपाय है इस बीमारी से बचने व इसके संक्रमण को रोकने का, तो क्यों न इसे परिवार के साथ जुड़ने का उनको समझाने का, बड़ो से सीखने व बच्चो को सिखाने का अवसर बनालें। हो सकता है यह सामाजिक दूरी भले ही आपको बन्धन लग रही हो लेकिन आपके अन्दर छिपी प्रतिभाओं–गायन, वादन,लेखन,चित्रकला, पाककला,कम्प्यूटर द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण, Short Notes बनाने आदि को निखारने, सीखने का अवसर बन जाये। जिन कार्यों को करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता था सोचते थे समय मिलेगा तो करेंगे उन्हें करा जाए, इन्टरनेट के माध्यम से तो आज भी पूरे विश्व से जुड़े हैं अपने संस्मरण, अपनी प्रतिभा को उस माध्यम से आप सब तक सरलता से पहुंचा सकते हैं, जब पूरा विश्व एक निराशा के दौर में है युवाओं को उसमें आशा व उत्साह का संचार करना चाहिए, सृजनात्मक तरीके से अपने विचारों, कृत्यों को साझा करिए जिससे औरों को भी प्रोत्साहन मिले, छात्र वर्ग से यह अपील भी है कि वे परम्परागत पढ़ाई के तरीके से बाहर निकलकर ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई के अवसर तलाशें, अनेकों ऐंसे पोर्टल हैं जिनपर आप निःशुल्क पंजीकरण कराके अपने विषय का ज्ञान ले सकते हैं। स्वयं में भी छोटे–छोटे समूह बनाकर जिसकी जिस विषय में रूचि हो Short Notes बनाकर Whatsapp या ई–मेल द्वारा साझा कर सकते हैं, प्रश्नोत्तरों के कार्यक्रम, हम शिक्षकों द्वारा छात्रों हेतु आयोजित किए जाएं तो छात्रों में एक उदासीनता का माहौल खत्म होगा, प्रतिदिन यदि एक टौपिक डिजिटल माध्यम

से छात्रों को विमर्श करने, उनपर 100–200 शब्द लिखकर भेजने का कार्य दिया जाए तो यह उनमें सकारात्मकता का संचार करेगा, वर्तमान परिस्थितियों में अपने बुजुर्गों की सेहत का ध्यान रखना, जरूरतमंद गरीबों की सहायता करना। अपने घर के छोटे बच्चों को पढ़ाना, सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चत करना जैसे अनेकों ऐंसे कार्य हैं जिन्हें यदि हम घर पर रहकर करना प्रारम्भ कर देंगें तो यह लॉकडाउन भविष्य के लिए अनेकों ऐंसी यादें छोड़ जायेगा जिन्हें न केवल आप बल्कि पूरा समाज, भारत व विश्व एक मिसाल के तौर पर पेश करेगा, जब यह चुनौती भरा वर्तमान हमारा अतीत बनेगा तो कोई ऐंसी दुःखद याद न छोड़े जो हमें कांटे की तरह चुभती रहे, समय का चक्र चलता रहेगा, वर्तमान का प्रत्येक क्षण हमारा हर कदम हमारा भविष्य तो निर्धारित करता ही है साथ में हमारा इतिहास भी बन जाता है, आज फिर से प्रत्येक भारतवासी की नैतिक जिम्मेदारी है कि अपने गौरवशाली इतिहास को याद करते हुए समाज की सुरक्षा, सुव्यवस्था, सम्पन्नता और समृद्धि हेतु कार्य करें। आइये एक संकल्प लें कि हमारा कोई भी कृत्य हमारे देश को किसी परेशानी में न डालें, संयम और धैर्य आज की आवश्यकता है, देश हित में विश्व हित में अपना योगदान दे। स्वस्थ रहें सुरक्षित रहें।